बाइबल टीचर

वर्ष 19 | अगस्त 2022 | अंक 9

सम्पादकीय

लोग परमेश्वर को भूल गये हैं।

आपकी सांसे अभी भी चल रही हैं इसलिये परमेश्वर का धन्यवाद कीजिये। हम लोग अक्सर यह भूल जाते हैं कि जिस परमेश्वर ने हमें बनाया है, उसी ने हमें आज तक इस पृथ्वी पर जीवित रखा हुआ है। आप आशीषित हैं, क्योंकि परमेश्वर ने आपकी प्रत्येक आवश्यकता को पूरा किया है। कई लोग उसका धन्यवाद करने के बजाय घमण्ड से फूल जाते हैं।

भजन का लेखक कहता है, ''हे मेरे मन, यहोवा को धन्यवाद कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे। हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह और उसके किसी उपकार को न भूलना।'' (भजन 103:1-2)। क्या आपको याद है कि परमेश्वर ने आपके साथ कितने उपकार किये हैं? आप शायद जब किसी समस्या में फंसे हुए थे और बहुत बीमार थे, परन्तु उसने आपको बचाया इसलिये उसके उपकार को न भूलें। ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने विपत्ति के समय परमेश्वर को नहीं छोड़ा। (भजन 44:17)। अय्यूब के बारे में हम पढ़ते हैं कि उसके जीवन में भी बहुत सारी विपत्तियाँ आई लेकिन उसने अपने परमेश्वर को नहीं छोड़ा। बाइबल में चेतावनियाँ दी गई है कि हमें परमेश्वर को नहीं भूलना चाहिए। (व्यवस्था विवरण 8:11)। इब्रानियों का लेखक कहता है, ''और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों की नाई दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हल्की बात न जान और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़। क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।'' (इब्रानियों 12:5-6)। मनुष्य को परमेश्वर से सारे मन से प्यार करना चाहिये। परमेश्वर जलन रखने वाला परमेश्वर है, इसलिये हमें किसी भी और ईश्वर या प्रतिमा के आगे नहीं झुकना है। (निर्गमन 20:2, 6)। इस संसार में मनुष्यों द्वारा बनाये गए कई ईश्वर की उपासना

करनी है। हमें उससे प्रेम करना है। तथा उसकी अज्ञाओं को मानना है। (यूहन्ना 14:15)।

जिस प्रकार से नूह के समय में लोग परमेश्वर को भूलकर केवल बुरा ही सोचते थे, ठीक वैसे ही मनुष्य भी आज परमेश्वर को भूल चुका है तथा बुराई फैलते ही जा रही है। यिर्मयाह के द्वारा परमेश्वर ने कहा था कि, मेरे लोग मुझे भूल गये हैं, ''चाहे तू अपने को सज्जी से धोए और बहुत साबुन भी प्रयोग करे तो भी तेरे अधर्म का धब्बा मेरे सामने बना रहेगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।'' (यिर्मयाह 3:22)। यहेजकेल के द्वारा परमेश्वर अपने लोगों से कहता है कि, ''तुझमें हत्या करने के लिये उन्होंने घूस ली है, तुने ब्याज और सूद लिया और अपने पड़ोसियों को पीस-पीसकर अन्याय से लाभ उठाया; और मुझ को तूने भुला दिया है, प्रभु की यही वाणी है।'' (यहेजकल 22:12)।

आज का समय बहुत बुरा चल रहा है। अधिकतर लोग संसार की बातों पर अधिक मन लगा रहे हैं तथा आत्मिक बातों से उनका मन दूर होता जा रहा है।

एक बात जो देखने में आ रही है कि इस युग में लोग परमेश्वर को भूलकर झूठे गुरूओं और प्रचारकों के पीछे जा रहे हैं। परमेश्वर ऐसे झूठे भविष्यदूक्ताओं के विषय में कहता है, ''यहोवा की यह वाणी है, देखो, जो अविशक्ता मेरे वचन औरों से चुरा-चुरा कर बोलते है, मैं उनके विरूद्ध हूँ। फिर यहोवा की यह वाणी है कि जो भविष्यदूक्ता ''उसकी यह वाणी है'' ऐसी झूठी वाणी कहकर अपनी-अपनी जीभ बुलाते हैं, मैं उनके भी विरूद्ध हूँ। (यहजकेल 23:30-31)। उस पद में लिखा है, ''यहोवा की यह भी वाणी है कि जो बिना मेरे भेजे वा बिना मेरी आज्ञा पाए स्वप्न देखने का झूठा दावा करके भविष्यद्वाणी करते हैं, और उसका वर्णन करके मेरी प्रजा को भले घमण्ड में आकर भरमाते है, उनके भी मैं विरूद्ध हूँ, और उनसे मेरी प्रज्ञा के लोगों का कुछ लाभ न होगा।''

कई लोग ऐसे भी है जब उनके पास बहुत सारा धन दौलत आ जाता हैं तब अचानक से उनमें घमण्ड पनपते लगता है। होशे भविष्यदूक्ता के द्वारा परमेश्वर कहता है, ''मित्र देश ही से मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूँ, तू मुझे छोड़ किसी को परमेश्वर करके न मानना और न जानकर, क्योंकि मेरे सिवा कोई तेरा उद्धारकर्त्ता नहीं है। फिर वह 6 पद में कहता है, ''परन्तु जब इस्त्राएली चराए जाते थे और वे तृप्त हो गए, तब तृप्त होने पर उनका मन घमण्ड से भर गया, इस कारण वे मुझ को भूल गए।''

आज जब लोगों के पास पैसा आ जाता है, घर खरीद लेते हैं तथा और बहुत सारी आशिषें मिल जाती हैं तब धीरे-धीरे उनके विश्वास में कमी आने लगती है। इस्त्राएलियों के बारे में यह बात बोली गई थी कि उन्हें अपनी चौकसी करनी है, ''हे इस्त्राएल सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है। तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।'' (व्यवस्था 6:4-5)। फिर वह कहता है, ''तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू यहोवा

को भूल जाए जो तुझे दास्त्व के घर अर्थात् मिस्त्र देश से निकाल लाया है। अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, उसी की सेवा करना'' (व्यवस्था 6:12-13)। परमेश्वर अपने लोगों से कहता है, इसलिये सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो आज्ञा, नियम और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनका मानना छोड़ दे। ऐसा न हो कि जब तू खाकर तृप्त हो, और अच्छे-अच्छे घर बनाकर उनमें रहने लगे, तब तेरे मन में अहंकार समा जाए और तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूल जाए। (12-14 पद)। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग प्रभु के दिन कलीसिया के साथ आराधना करें (इब्रा. 10:25) परन्तु बहुत से लोग उसे भूल गए हैं। आज मसीही लोगों ने प्रभु के प्रति अपना पहिला से प्रेम छोड़ दिया है। (प्रकाशित 2:4)

आत्मिक सुरक्षा

सनी डेविड

किसी भी देश के लिये उसकी सुरक्षा बड़ी ही महत्वपूर्ण होती है। प्रत्येक देश अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिये हर वर्ष करोड़ों रुपए खर्च करता है। क्योंकि प्रत्येक देश सुरक्षित रहना चाहता है। और सुरक्षा की आवश्यकता इसलिए अनुभव होती है, क्योंकि खतरा कभी भी आ सकता है। ठीक यही बात हम अपने घरों में और अपने जीवन में भी देखते हैं। लालच, बुराई, चोरी, डकैती संसार भर में बढ़ रहे हैं। एक समय था, जब लोगों को हवाई जहाज में यात्रा करने के लिये केवल अपने कागजात को ही दिखाना पड़ता था। पर अब ऐसा नहीं है। अब हर एक यात्री को कड़ी सुरक्षा जांच से होकर गुजरना पड़ता है। घरों में लोग तार और लोहे की सलाखें लगवाते है, मजबूत दरवाजे और ताले लगाते हैं। एक समय था जब लोगों को केवल जंगली जानवरों का ही डर रहता था। पर अब उस से भी ज्यादा लोग इंसानों से डरते हैं। पर सुरक्षा फिर भी नहीं मिलती। पृथ्वी पर हर एक इंसान सब जगह असुरक्षित है। चाहे आम लोग हों, चाहे धनवान हों, या राजनीति में हों। सब स्थानों पर लोग असुरक्षित है। कुछ लोग अपने आपको इतना असुरक्षित भी अनुभव करते हैं कि वे अपने सब तरफ सुरक्षा का प्रबंध करवा लेते हैं। जहां जाते हैं सुरक्षा कर्मचारियों के साथ जाते हैं। लेकिन फिर भी वे अपने आप को खतरे से वास्तव में नहीं बचा पाते। हमारे मेडिकल साइन्स ने आज ऐसी उन्नति और प्रगति कर ली है, और ऐसे बड़े-बड़े उपकरण और डॉक्टर आज सारे संसार में उपलब्ध हैं, कई बार कभी-कभी मरीज को मौत के मुंह से भी निकाल लेते हैं। पर कुछ समय पश्चात वही अनुभवी डाक्टर उन्हीं रोगों की चेष्टा में आकर स्वयं अपने आप को भी नहीं बचा पाते।

परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में लिखा है, यूहन्ना 6:27 में, प्रभु यीशु ने कहा था, कि, ''नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो परन्तु उस भोजन के लिये करो

जो अनंत जीवन तक ठहरता है। यह उपदेश प्रभु ने उन लोगों को दिया था, जो उसे रोटियों के लिये ढूंढ़ रहे थे, क्योंकि एक ही दिन पहले प्रभु ने आश्चर्यक्रम करके उनके लिए इतना ढेर भोजन पैदा कर दिया था, कि न केवल पांच हजार लोगों ने पेट भर के खाया ही था, पर बाद में बारह टोकरे भरके रोटियों के टुकड़े उठाए गए थे। सो वे उस नाशमान भोजन को प्राप्त करने के लिये प्रभु को फिर से ढूंढ़ रहे थे। पर यीशु ने उनसे कहा, कि नाशमान नहीं, पर उस भोजन को प्राप्त करने के लिये परिश्रम करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है। वे शारीरिक भोजन ढूंढ़ रहे थे, लेकिन प्रभु ने उनसे कहा, कि इससे भी अधिक आवश्यकता उन्हें उस भोजन की है जो आत्मिक है और जो अनन्त है। अब इसका अर्थ यह नहीं है, कि प्रभु उनसे कह रहा था कि उन्हें शारीरिक भोजन की आवश्यकता ही नहीं है। क्योंकि यदि ऐसा होता, तो प्रभु ने स्वयं, एक दिन पहले, उन्हें भोजन क्यों दिया था? पर जिस बात को प्रभु उनको सिखा रहा था वह यह थी, कि शारीरिक भोजन से भी अधिक आवश्यकता उन्हें आत्मिक भोजन की है। क्योंकि शरीर मनुष्य का वह भाग है, जो नाशवान है, अर्थात् शरीर को हमेशा के लिये बचाया नहीं जा सकता। उसकी सुरक्षा के प्रबंध करके भी हम उसे वास्तव में सुरक्षित नहीं रख सकते। और उसे बचाना चाहकर भी हम उसे बचा नहीं सकते। क्योंकि शरीर तो है ही नाशमान। उसे तो एक न एक दिन मिट्टी में मिलना ही है।

पर आत्मा मनुष्य का वह भाग है जिस के अस्तित्व को पृथ्वी पर कोई वस्तु नहीं मिटा सकती। मनुष्य की आत्मा अमर और अविनाश है। परमेश्वर की बाइबल में लिखा है, कि मनुष्य के शरीर को परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी से बनाया था, पर उस शरीर के भीतर परमेश्वर ने अपने आत्मा के जीवन को फूंका था। सो मनुष्य एक आत्मिक प्राणी बन गया था। वह परमेश्वर के स्वरूप और उसकी समानता पर बनाया गया एक प्राणी था। इसलिये, जैसे परमेश्वर जो परमात्मा है, सर्वदा विद्यमान रहेगा, ऐसे ही हर एक इंसान भी हमेशा वर्तमान रहेगा– अर्थात् आत्मिक रूप से। इसलिये प्रभु यीशु ने उन लोगों से कहा था, कि नाशमान भोजन जो नाशमान शरीर के लिये है, उसकी चिंता करना छोड़कर, आत्मिक भोजन की, जो आत्मा के लिये है, खोज करो। और एक अन्य स्थान पर प्रभु ने लोगों को शिक्षा देकर कहा था, कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु परमेश्वर के मुख से निकले वचन से जीवित रहेगा। (मत्ती 4:4)। इसका अर्थ क्या है? इसका मतलब यह है, कि रोटी से तो इंसान शारीरिक रूप से ही कुछ समय तक जिंदा रह सकता है, पर आत्मा को जीवित रखने के लिये परमेश्वर के वचन की जरूरत है। तो क्या इसका अर्थ यह है कि आत्मा मर सकती है? पर आत्मा तो अमर है, वह तो हमेशा वर्तमान रहेगी। जी हां, यह बात तो बिल्कुल सच है, कि आत्मा अमर है, और उसका अस्तित्व कभी नहीं मिट सकता। पर जब हम मरने के वास्तविक अर्थ को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि मरे का अर्थ वास्तव में अलग होना है। जैसे कि आत्मा का शरीर से अलग हो जाना मृत्यु कहलाता है। ऐसे ही, परमेश्वर अर्थात् परमात्मा से आत्मा का अलग हो जाना भी मृत्यु कहलाता है। यानि जब मनुष्य की आत्मा का संबंध परमात्मा से टूट जाता है, तो मनुष्य आत्मिक रूप से मर जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य की आत्मा

का अस्तित्व समाप्त हो जाता है- क्योंकि आत्मा तो अविनाशी है। पर आत्मा का संबंध परमात्मा से टूट जाना मृत्यु कहलाता है। जैसे कि आपका रेडियो जो अभी बज रहा है। पर अगर आप रेडियो के पलग को सॉकेट में से निकल लें तो रेडियो बजना बंद हो जाएगा। आपका रेडियो खराब नहीं हुआ, पर उसकी आवाज बंद हो गई, क्योंकि बिजली से उसका संबंध टूट गया। बिजली या बैटरी वह मुख्य स्रोत है जिसकी शक्ति से रेडियो बजता है। परन्तु जब मुख्य स्रोत से उसे अलग कर दिया जाता है तो वह बजना बंद हो जाता है, अर्थात् मर जाता है। ऐसे ही हर एक इंसान भी है। जब उसका जन्म होता है, तो उसकी आत्मा का सम्पर्क ईश्वर से रहता है। पर जब वह बालक बड़ा हो जाता है और अच्छाई और बुराई को समझने लगता है तो पाप में पड़कर वह परमात्मा से अपना संबंध तोड़ लेता है। और इस तरह से आत्मिक रूप से मर जाता है।

प्रभु यीशु मसीह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच इसीलिये आया था, ताकि इंसान के उस टूटे हुए संबंध को फिर से परमात्मा के साथ जोड़ दे। और परमेश्वर और मनुष्य के बीच में संबंध टूटने का एकमात्र जो कारण था, वह है पाप। परमेश्वर मनुष्य के साथ रह सकता है परन्तु पाप के साथ नहीं। तौभी प्रत्येक मनुष्य जब इस जगत को छोड़कर जाता है, तो वह उन दो में से किसी एक आत्मिक स्थान में प्रवेश करने के लिये जाता है जिन्हें बाइबल में स्वर्ग और नरक कहकर सम्बोधित किया गया है। नरक एक आत्मिक स्थान है, और ऐसे ही स्वर्ग भी एक आत्मिक स्थान है। और जिस प्रकार आत्मा सदा विद्यमान रहेगी, ऐसे ही स्वर्ग और नरक भी हमेशा विद्यमान रहेंगे। यानि प्रत्येक आत्मा का अनन्त निवास स्थान या तो स्वर्ग में होगा या नरक में होगा। नरक वह स्थान है, जहां वे आत्माएं होंगी जिन्होंने अपने पाप से छुटकारा प्राप्त नहीं किया है। और स्वर्ग में वे आत्माएं प्रवेश करेंगी जिन्होंने अपने पापों से छुटकारा पा लिया है। स्वर्ग में अनन्त जीवन है, क्योंकि वहां परमेश्वर है। पर नरक में अनन्त मृत्यु है, क्योंकि वहां परमेश्वर नहीं है।

किन्तु, परमेश्वर हम में से हर एक को स्वर्ग में अपने पास अनन्त जीवन देना चाहता हैं और इसलिये परमेश्वर ने पृथ्वी पर हर एक इंसान के पापों का प्रायश्चित करने का एक उपाय बनाया है। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जा पाएगा, तो वह पाप के कारण ही नहीं जा पाएगा। और बाइबल में यह भी कहा गया है, कि सब ने पाप किया है। पर यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, बाइबल कहती है, सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। (रोमियों 3:23, 6:23, 1 यूहन्ना 2:2, 4:10)।

आज यदि हम परमेश्वर के सुसमाचार को स्वीकार कर लें तो हम अपनी आत्मा को हमेशा के लिये सुरक्षित कर सकते हैं। हम इस बात को निश्चित रूप से जान सकते हैं, कि हमारे पापों का प्रायश्चित किया जा चुका है, और हम ने परमेश्वर की उस बात को मान लिया है, जिसको मानने से हर एक इंसान अपने आपको स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बना सकता है। परमेश्वर चाहता है, कि पृथ्वी पर हर एक व्यक्ति उस के पुत्र में विश्वास लाए कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। और हर एक बुराई से अपना मन फिराकर अपने पापों से छुटकारा पाने के लिये पानी में उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा ले। और इस प्रकार उसकी आज्ञा को मानकर, अपना

प्रतिदिन का जीवन उन्हीं आदर्शों पर चलकर व्यतीत करे जिसकी शिक्षा हमें प्रभु यीशु रोज़ मिलते थे।

निश्चय ही, शारीरिक रूप से तो हम में से कोई भी अपने आपको वास्तव में सुरक्षित नहीं बना सकता। पर हम में से हर एक आत्मिक रूप से अपने आपको अवश्य सुरक्षित कर सकता है। परमेश्वर की बाइबल में, गलतियों 3:26, 27 में इस प्रकार लिखा है, ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहन लिया है। क्या आप मसीह में सुरक्षित हैं? यदि नहीं, तो उसमें विश्वास लाईए, और उसकी आज्ञा को मानकर उसे पहन लीजिए। क्योंकि आत्मिक सुरक्षा का आश्वासन केवल उसी में है।

चंदा

जे. सी. चोट

अब हम नए नियम की उपासना के अंतिम नियम को, अर्थात चंदा देने के संबध में देखेंगे। यदि बाइबल में किसी भी विषय पर विस्तार से बताया गया है तो वह यही है। तौभी बहुतेरे लोग इस विषय में अज्ञात हैं। इसलिये अब हम देखेंगे कि पवित्र शास्त्र इस विषय में हमें क्या सिखाता है। सबसे पहिले हम इस संबंध में पवित्र बाइबल में लिखें कुछ पदों को देखेंगे।

1 कुरिन्थियों 16:1, 2, में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, अब उस चंदे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिए किया जाता है, जैसी आज्ञा मैंने गलतिया की कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम भी करो। सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चंदा न करना पड़े।

अब इस से पूर्व कि हम इस संबंध में आगे कुछ और देखें, हम इन पदों पर विचार करके देखें कि लेखक यहां विशेष रूप से क्या बता रहा है-

1. यह चंदा सप्ताह के पहिले दिन सन्डे को एकत्रित किया जाना चाहिए। क्यों? चंदा देने के लिए यह दिन इसलिये चुना गया था क्योंकि उसी दिन मसीही लोग आराधना करने के लिये इक्ट्ठे होते थे। परन्तु क्या अन्य दिनों में भी यह किया जा सकता है? अन्य दिनों के बारे में यहां कुछ नहीं कहा गया है। जहां तक इस आज्ञा का प्रश्न है इस संबंध में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यह कार्य सप्ताह के पहिले दिन किया जाना चाहिए। किन्तु देखने में यह आता है कि विभिन्न कलीसियाओं के लोग जब भी एकत्रित होते हैं, तो उनकी सभाओं में चंदा इकट्ठा किया जाता है, और चाहे पूरे सप्ताह भर सभाएं चलती रहे तौभी प्रत्येक दिन चंदा लिया जाता है। परन्तु यदि इस संबंध में हम पवित्र वचन की आज्ञा पर ही स्थिर रहना चाहते हैं तो इस काम को उसी दिन किया जाना चाहिए जिस के विषय में आज्ञा दी गई है। इसलिये

मसीह की कलीसियाएं उपासना करने के लिये जब प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन इक्ट्ठा होती है तो कलीसिया के सदस्य उसी समय अपना चंदा एकत्रित करते हैं।

2. चंदा देने के लिये सभी मसीही लोगों को कहा गया था। किन्तु यह आज्ञा उन्हीं लोगों के लिये थी जिन्हें गुजरे सप्ताह में कुछ आमदनी हुई थी। प्रभु अपने उन लोगों से जिनकी आमदनी का कोई साधन नहीं है ऐसी आज्ञा नहीं देता कि वे चंदा दें। किन्तु जो लोग देने के योग्य हैं प्रभु उनसे अवश्य आशा करता है कि वे दें, और ऐसा न करना एक पाप है।

3. उन्हें वैसे ही देना था जैसे कि उनके पास था। उस समय के दृष्टिकोण से इसका अर्थ यह हो सकता था कि वे अपनी उपज में से या अपने पशु-पक्षियों में से या जो कुछ भी उनकी आमदनी थी उस में से दे। इसका अर्थ पैसा भी हो सकता था। आज हम प्राय: पैसे ही देते हैं, क्योंकि जो कुछ भी लोगों के पास होता है उस से वे पैसा ही कमाते हैं या फिर पैसा कमाने के लिये कोई काम करते हैं। परन्तु यह चंदा या दान चाहे पैसे के रूप में दिया जाए या वस्तुओं के रूप में, यह इस बात पर निर्भर करता है कि, वे लोग किस स्थान पर है और वे किस तरह के लोग हैं, और उनकी क्या परिस्थिति है।

4. उन्हें अपनी आमदनी के अनुसार देने को कहा गया था। अर्थात् उन्हें अपनी कमाई के अनुसार देना था। परन्तु कमाई का कितना हिस्सा देना था? यह उनका निजि निश्चय था, और यही बात आज भी है। नए नियम में दशमांस अर्थात कमाई का दसवां हिस्सा देने की आज्ञा नहीं दी गई है। परन्तु यह भी सही है कि हमें अपनी कमाई के दसवें भाग से अधिक देने का प्रयत्न करना चाहिए। क्योंकि हम परमेश्वर के उस नियम या व्यवस्था से अधिक उत्तम नियम के भीतर आज है जिसमें कि यहूदी, जो दसवां भाग देते थे, रहते थे। सो जबकि आज हमारे पास एक उत्तम नियम है, और उत्तम प्रतिज्ञाएं हैं, और एक महान आशा है, तो हमें क्यों नहीं अधिक देना चाहिए? यहां प्राय देखने में आता है कि लगभग सभी देना तो चाहते हैं, परन्तु अधिकतर लोग चंदे में कुछ सिक्के ही डालते हैं। जबकि कुछ लोगों के लिये उतना ही देना उनकी योग्यानुसार उचित हो सकता है, परन्तु इस में कोई संदेह नहीं है कि अधिकांश लोग उसे कहीं अधिक दे सकते हैं जितना कि वे देते हैं। मैं इस बात को भी देखता हूं यहां भारत में लोगों के पास पान-सिगरेट तथा सिनेमा इत्यादि के लिये पैसे हैं। मैं मानता हूं कि सांसारिक लोग इन बातों में पैसे उड़ाते हैं, परन्तु यदि वे लोग इस प्रकार अपना पैसा खर्च करते हैं, तो आप अपने पैसे क्या करते हैं? शायद आप भी अपने पैसे को कुछ ऐसी ही वस्तुओं पर खर्च करते होंगे? परन्तु उसी पैसे को प्रभु के कार्य के लिए देकर हम अपने चंदे को बढ़ा सकते हैं। प्रभु आज्ञा देकर कहता है कि हम उसी प्रकार दें जैसे कि हमारी आमदनी है। आप जानते हैं कि आपकी कितनी आमदनी है, और आप यह भी जानते हैं कि आपको कितना देना चाहिए। और यदि हम उसी तरह से दें तो निश्चय ही हमारा देना कुछ एक सिक्कों के विपरीत कागज के रुपयों के रूप में होगा। कुछ लोग आप में से ऐसे हैं जो उस कागज के धन को उससे कहीं अधिक बढ़कर दे सकते हैं जितना कि आप सोचते हैं। यह सच है कि मैं आप को नहीं कह सकता है कि आप कितना दें, और न ही आप मुझसे

कह सकते हैं, परन्तु प्रभु जानता कि हमें कितना देना चाहिए, सो इसलिए यह समय है कि हम और अधिक देने का निश्चय करें। क्या आप इस बात से सहमत नहीं है?

5. उन्हें प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन चंदा इकट्ठा करना था ताकि जब वह (पौलुस) आए तो उस समय उन्हें इक्ट्ठा न करना पड़े। दूसरे शब्दों में, यदि वे उसके उपदेश का पालन करेंगे तो उसके आने पर सब कुछ सही पाया जाएगा और उस धन से वह उस कार्य को कर सकेगा जो आवश्यक होगा। यही बात आज भी सच है। यदि हम प्रभु की इच्छा के अनुसार देंगे तो उसके कार्य को पूरा करने के लिए हमारे पास पर्याप्त धन होगा। फिर भी आज अनेक ऐसी कलीसियाएं संसार में है जो इसका पालन नहीं करती है और इस कारण उन्हें हर समय पैसे मांगने पड़ते हैं। स्वयं अपने पास से देने के विपरीत, उन्हें सहायता के लिये अन्य लोगों के पास जाना पड़ता है। पैसे इक्ट्ठा करने के लिए कुछ कलीसियाएं पत्रिकाएं तथा पुस्तकें बेचती है कुछ मेले तथा बाजार लगाती है। तो कुछ खाने-पीने के टिकट बेचकर या किसी प्रकार के अन्य कार्यक्रमों को करके पैसा एकत्रित करती है। परन्तु प्रभु ने अपने लोगों को आज्ञा दी है कि वे अपने पास से दें ताकि उस धन को कलीसिया के आवश्यक कामों के लिये इस्तेमाल किया जाए। प्रभु इस तरह से अपने कामों को करना चाहता है, और निसंदेह उसके मार्ग को मनुष्य बदलकर सुधार नहीं सकता।

अब देने के ही संबंध में पवित्रशास्त्र के कुछ अन्य पदों पर भी हम विचार करेंगे। 2 कुरिन्थियों 9:6-7 में हम इस प्रकार पढ़ते है। परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी, और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे, न कुढ़-कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है। अब इस संबंध में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें:

1. वह कहता है कि हम वैसे ही काटेंगे भी जैसे कि हमने बोया है। यदि हम थोड़ा बोते हैं तो हम थोड़ा काटेंगे भी। परन्तु यदि हम अधिक बोते है तो हम अधिक काटेंगे। अब यह सिद्धांत चाहे खेती हो या चाहे ब्योपार हो या जीवन का कोई अन्य कारोबार हो जब बातों पर ठीक बैठता है। प्रभु के काम में भी ठीक यही सच है। जितना अधिक हम करेंगे उतना ही अधिक परिणाम निकलेगा। जिन लोगों को उससे कुछ प्राप्त नहीं होता तो इसीलिये प्राप्त नहीं होता क्योंकि वे उसमें कुछ लगाते नहीं है। कलीसिया को न देकर आप ऐसी आशा नहीं रख सकते कि उस से सदा आपको कुछ मिलता ही रहेगा। मुझे ऐसा लगता है कि प्रभु पर हम में से अधिकांश लोगों का विश्वास इतना अधिक नहीं है कि हमें उस के वचन पर भरोसा हो, परन्तु हमें उसे परखना चाहिए। और यदि हम ऐसा करेंगे तो मुझे पूरा निश्चय है कि हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचगे कि जितना अधिक हम देंगे उतना ही अधिक हम प्राप्त भी करेंगे।

2. फिर वह कहता है, कि मनुष्य जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे। इस बात का निश्चय हमें अपने मनों में उपासना सभा में आने से पहिले ही कर लेना चाहिए कि हम कितना चंदा देंगे। यहां उसके कहने का यही अभिप्राय है। चंदा देने के लिये उस समय तक प्रतिक्षा न करें जब तक कि चंदे की थैली या टोकरी आपके पास न आ जाए और एका-एक कुछ देने के लिये आप अपनी जेब टटोलने लगे। परन्तु

अपनी योग्यता के अनुसार, पहिले से अपने मन में ठान कर रखें कि आप क्या देने जा रहे हैं, और वैसे ही दें।

3. और वह कहता है कि मनुष्य को कुढ़-कुढ़ा कर नहीं देना चाहिए। अर्थात् देते हुए आप को ऐसा महसूस नहीं होना चाहिए कि आप से कोई जबरदस्ती की जा रही है या आप पर कोई दबाव डाला जा रहा है। यदि आप वास्तव में न चाहते हुए भी देते हैं, तो ऐसा देना आपके लिये तथा प्रभु के प्रति व्यर्थ है। कई लोग चर्च मैम्बरशिप फीस या चंदा मांगते हैं बाइबल ऐसा नहीं सिखाती।

4. फिर वह कहता है, कि देते समय मनुष्य को ऐसा नहीं समझना चाहिए कि उसके ऊपर दबाव डालकर कहा जा रहा है कि उसे अवश्य ही देना चाहिए। प्रभु आप को ऐसे किसी बंधन में नहीं बांध रहा है जहां आपको ऐसा अनुभव होने लगे कि आपको इस बात के लिए विवश किया जा रहा है कि आप अवश्य ही दें। ऐसा कदापि नहीं है। कभी भी चंदा दबाब में नहीं देना चाहिए। किसी प्रचारक के दबाब में आकर चंदा न दें।

5. इसके विपरीत, वह कहता है, कि प्रभु हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है। वह कैसे चाहता है कि आप दें? वह चाहता है कि आप खुशी के साथ दें, अर्थात् ऐसे कि आप उसे देना चाहते हैं, और उससे आपको प्रसन्नता है। हमें सदा ऐसे ही देने वाले बनना चाहिए।

अब, अन्त में, हमें इस बात को याद रखना चाहिए कि स्वयं प्रभु ने कहा था, कि लेने से देना धन्य है। (प्रेरितों 20:35)। किन्तु मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है, कि प्रभु के इस कथन को हम में से बहुतेरों ने उलटा करके ऐसे पढ़ना आरंभ कर दिया है, कि देने से लेना धन्य है। क्यों? क्योंकि हम में से बहुतेरे लालची, कंजूस और स्वार्थी हैं, और इस कारण जो वास्तव में प्रभु का है वह उसे न देकर हम उसे लूटते है। सो, परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम इस विषय में जागरूक बनें और वह जो वास्तव में उसी का है, परन्तु हमारे पास है, हम उसे देना आरंभ करें। जब तक पवित्र वचन के अनुसार देना हम नहीं सीख लेते तब तक हम उस प्रकार के मसीही नहीं बन सकते जैसे कि हमें वास्तव में होना चाहिए। चंदा दबाब में आकर नहीं बल्कि मन से और खुश होकर देना चाहिए। सभी प्रचारकों को यह सीखना है कि वे चंदा देने वाले बनें, न कि लेने वाले।

एक सामरी स्त्री का प्रभाव

(यूहन्ना 4:1-43)

सूज़ी फ्रैड्रिक

हम में से प्रत्येक व्यक्ति दूसरों पर किसी न किसी रूप में प्रभाव छोड़ता है। कुछ लोग, क्योंकि वे काफ़ी प्रसिद्ध हैं, या संसार में उनका बड़ा नाम हैं, इस कारण शायद दूसरों पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सीधे उन लोगों पर अपना

प्रभाव छोड़ते हैं जिन्हें वे केवल व्यक्तिगत रूप से जानते हैं। परन्तु जब हम इस विषय पर सोचते हैं कि प्रत्येक जन दूसरों के जीवन से प्रभावित होता है, तब हम शायद यह कह सकते हैं कि जान पहचान से अधिक हमारा प्रभाव दूसरों पर तेज़ी से फैलता है। उदाहरण के लिये, मैं ये कह सकती हूं कि मेरा प्रभाव मेरी बेटी पर जो मैंने छोड़ा है वो उन दूसरे लोगों पर किस प्रकार से पड़ेगा जिन्हें मैं कभी नहीं मिली। जिस प्रकार का प्रभाव मैंने अपनी बेटी पर छोड़ा है, शायद वैसा ही प्रभाव, चाहे वो बुरा हो या अच्छा, वह अपने ससुराल के लोगों पर भी छोड़ें। क्योंकि यह बात बिल्कुल सच और खरी है, इसलिये मुझे बड़ा सावधान रहना चाहिए कि मेरा व्यवहार कैसा है।

यीशु जब यहुदिया को छोड़कर गलील को जा रहा था तब उसे सामरिया नामक स्थान से होकर गुज़रना था। तब उसने एक कुंआ देखा और आराम करने के लिये वह वहां रूक गया, और उसके चेले जो उसके साथ थे बाज़ार से भोजन लेने के लिये चले गये। जब वह उनके आने की बाट जोह रहा था तब एक स्त्री उसी घड़ी जल भरने के लिये कुंए पर आई। यीशु ने उस स्त्री से पानी पीने के लिये मांगा। इस बात से उसे बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि यहुदी और सामरी अक्सर एक दूसरे से बातचीत नहीं किया करते थे। इस स्त्री ने यीशु पर एक अच्छा प्रभाव छोड़ा और थोड़ी सी बातचीत के बीच, उसने यीशु से कहा, "सर, मुझे ऐसा लग रहा है कि आप एक भविष्यदूक्ता है" परन्तु यीशु उससे अराधना के विषय में बात करने लगा और तब यीशु ने उससे एक और बात कही कि जिस स्थान पर आराधना होगी उसका इतना महत्व नहीं होगा क्योंकि, "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।" परमेश्वर की उपासना किन्हीं रीतिरिवाज़ों पर आधारित नहीं होती बल्कि सच्चे मन और पूरी आस्था के साथ की जाती है। (यूहन्ना 4:24)। उसने उस स्त्री से कहा कि "मैं वही हूं" अर्थात मसायाह (मुक्तिदाता), जिसका लोग इन्तज़ार कर रहे हैं। परमेश्वर की सच्ची उपासना तब होती है जब आत्मा और सच्चाई से की जाती है।

परमेश्वर "आत्मा" है इसलिये "अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें"। सच्ची उपासना के द्वारा मनुष्य की सहभागिता अपने सृष्टिकर्ता से होती हैं। सामरी स्त्री ने यीशु की बातों पर विश्वास करके उसे अपने जीवन में अपनाया और ऐसा करके उसने अपने आसपास के लोगों पर एक अच्छा प्रभाव छोड़ा।

असहमति

डेविड रोपर

पौलुस ने आरंभ किया, जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो; परन्तु उस की शंकाओं पर विवाद करने के लिए नहीं (14:1)। पहला प्रश्न जो खड़ा होता है वह यह है कि विश्वास में निर्बल से पौलुस का क्या अभिप्राय है? यूनानी भाषा

में आयत 1 में विश्वास शब्द से पहले एक निश्चय उप पद है (मेकोर्ड) नये नियम में यीशु पर केन्द्रित शिक्षा के लिए आमतौर पर विश्वास शब्द का इस्तेमाल किया गया है (उदाहरण के लिए देखें गलातियों 1:23)। इसलिए विश्वास में निर्बल का संकेत उस मसीही के लिए हो सकता है जिसे वचन की कम जानकारी हो या जो नया चेला हो। निश्चय ही जिन्हें विश्वास में निर्बल कहा गया है, उन्हें मसीह में उस स्वतंत्रता की समझ नहीं थी, जो नये नियम में बताई गई है।

परन्तु वचन में आगे हम देखेंगे कि इस वचन में पौलुस ने स्पष्टतया विश्वास शब्द का इस्तेमाल किसी हद शेष पत्र में इस्तेमाल से अलग किया। उदाहरण के लिए, पौलुस ने कहा, ''तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के सामने अपने ही मन में रख (आयत 22क)। अन्य शब्दों में अपने विश्वास को निजी रख। पौलुस मसीही लोगों को यीशु में अपने विश्वास को अपने तक रखने के लिए कभी नहीं कहता, सो यहां पर विश्वास का अर्थ अवश्य ही अलग होगा। विश्वास जिसका मूल अर्थ पूरी तरह से मानना या विश्वास करना है। यह बात कि किसके बारे में माना गया है इस शब्द में नहीं है; यह अवश्य संदर्भ से ही मिलती है। रोमियों के नाम पत्र के अधिकतर भाग में पौलुस ने विश्वास का इस्तेमाल यीशु मसीह में विश्वास के लिए किया, परन्तु रोमियों 14 में इस शब्द का अर्थ मुख्यतया विचाराधीन विषय के बारे में निजी विश्वास के लिए किया गया है।

यह मजबूत निजी विश्वास परमेश्वर के वचन या वचन की कुछ समझ के आधार पर हो सकता है। यह इस आधार पर हो सकता है कि किसी को जीवन भर क्या सिखाया गया है या किसी जानकारी के आधार पर या गलत जानकारी के आधार पर जैसे भी हो जिसे विश्वास होता है, वह सच्चे मन से मानता है कि यह सही है।

तो फिर इस वचन में विश्वास में निर्बल का अर्थ है कि किसी विशेष विश्वास में कोई भाई चाहे जितना भी सच्चा हो, परन्तु कई बार अपने विश्वास में वह गलत होता है। जो विश्वास में बलवान है वह जिसका विश्वास इस विशेष मुद्दे पर सही है।

आयत 2 में यह चर्चा रहती है ''एक बलवान भाई को पक्का विश्वास है कि सब कुछ खाना मांस सहित उचित है, परन्तु जो विश्वास में निर्बल है, वह साग-पात ही खाता है। कई लोग स्वास्थ्य कारणों से मांस से परहेज करते हैं, परन्तु यह आयत स्वास्थ्य से संबंधित नहीं है, बल्कि धार्मिक संदेहों की चर्चा करती है। जैसा पहले कहा गया था कि शाकाहारी यहूदी मसीही हो सकते हैं, जो गैर-कोशर मांस खाने से इनंकार करते थे। शायद शाकहारी लोग अन्य जाति मसीही थे, जो इस बात से परिचित थे कि बाजार में बिकने वाला कुछ मांस मूर्तियों को चढ़ाया गया है।

मूर्तियों के सामने चढ़ाया गया मांस बाजार में कैसे आ गया? मूर्तियों की पूजा करने वाला उपासक जानवर को मन्दिर में ले जाता था, जहां इसे मूर्तियों के सामने अर्पित किया जाता था। पुरोहित जानवर को काटकर चुनिंदा टुकड़े वेदी पर रख देता था, रह गए भाग को वह पुरोहित अपने लिए रख लेता था और शेष को आमदनी के स्रोत के रूप में बाजार में बेच देता था। अन्य जाति मसीही के लिए जिनका

पालन-पोषण मूर्ति पूजा के माहौल में हुआ था मूर्तियों के साथ अपने संबंध पर विचार किए बिना इस मांस को खाना कठिन था (देखें 1 कुरिन्थियों 8:7)। बीच का रास्ता ढूंढ़ते हुए उनमें से कइयों ने मांस खाना छोड़ दिया।

यदि निर्बल भाई व्यवस्था का पालन करने वाला यहूदी था, तो बलवान भाई वह था जिसे समझ थी कि मसीही लोग अब मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं है (देखें रोमियों 7:4, 6)। कोशर की शर्तों को पूरा करने के लिए मांस की आवश्यकता नहीं थी। यदि निर्बल भाई अन्य जाति मसीही था जो मूर्तियों के सामने अर्पित किए गए मांस पर अधिक ही ध्यान देता था, तो बलवान भाई वह था जिसे समझ थी कि मूर्ति अपने आप में कुछ नहीं है (देखें 1 कुरिन्थियों 8:4) और इसलिए मूर्ति के सामने किया गया वह बलिदान किसी प्रकार से मांस को प्रभावित नहीं करता। रोमियों 14 में थोड़ा आगे पौलुस ने कहा कि कोई वस्तु भोजन अपने आप से अशुद्ध नहीं (आयत 14 देखें मरकुस 7:19)। तीमुथियुस के नाम अपने पहले पत्र में पौलुस ने भोजन की जिन्हें परमेश्वर ने सृजा बात की और कहा कि परमेश्वर की सृजी हुई पर एक वस्तु अच्छी है, और कोई वस्तु अस्वीकार करने के योग्य नहीं, पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जाए (1 तीमुथियुस 4:3, 4)। मांस खाने के विषय में, बलवान भाई को यह समझ थी, जबकि निर्बल भाई को इस मामले में ज्ञान और समझ की कमी थी (देखें 1 कुरिन्थियों 8:7)।

रोमियों 14:1-15:13 में विवेक संवेदनशील है कहा गया है। निर्बल भाई विवेकपूर्ण ढंग से मांस नहीं खा सकता, जबकि बलवान भाई का विवेक इसके खाने से खराब नहीं होता।

चुनौती (आयतें 1, 3, 4)

1. नियम जब हम विवेकपूर्ण ढंग से विचार के मामलों में असहमत होते हैं तो हमें एक-दूसरे से कैसे व्यवहार करना चाहिए? पौलुस ने पहले बलवान भाई को चुनौती दी कि जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो (14:1क)। यह स्वागत का सुझाव देते हुए प्राप्तकर्ता की ओर से विशेष रुचि का संकेत देता है। उन्हें अपनी संगति में स्वीकार कर लो, कुड़कुड़ाते हुए या हिचकिचाते हुए नहीं, बल्कि खुली बाहों और दिल से।

पौलुस ने आगे कहा, परन्तु उसकी शंकाओं पर विवाद करने के लिए नहीं (आयत 1ख)। अन्य शब्दों में उसे अपनी संगति में केवल इसलिए न बुलाओ कि आप उसे यह जानने का अवसर दे सकें कि वह गलत कैसे है। बिना कोई विवाद आरंभ किए, उसका स्वागत करने को कहता है। एक उदाहरण ध्यान में आता है। एक धार्मिक गुट पर विचार करते हैं, जो यह सिखाता है कि गुरुवार के दिन मांस खाना गलत है। कल्पना करें कि आप किसी व्यक्ति को सिखाकर उसे बदलते हैं जिसका पालन-पोषण उस शिक्षा में हुआ था। उस व्यक्ति के बपतिस्मे के पानी में से बाहर आने पर क्या आप उसे गुरूवार के दिन मांस खाने से इंकार करने की मूर्खता पर भाषण देने के लिए एक ओर ले जाएंगे? बेशक नहीं। वह मसीह में नन्हा बालक है, जिसे गले से लगाने की आवश्यकता है, न कि बातों से उनके मुंह पर थप्पड़ मारने

की। समय बीतने पर उसे इस मामले पर आत्मिक समझ मिल जाएगी, परन्तु पहली बार उसे स्वीकार किया जाना आवश्यक है।

2. प्रासंगिकता किसी भाई को स्वीकार करने की चुनौती 15:7 में सब मसीही लोगों को शामिल करने के लिए विस्तार से बताई गई है, वह भाई चाहे बलवान हो या निर्बल। बलवान के लिए निर्बल को ग्रहण करने का क्या अर्थ और निर्बल के लिए बलवान को ग्रहण करने का क्या अर्थ है?

आयत 3 में पौलुस ने पहले बलवान से बात की मांस खाने वाले न खाने वाले को तुच्छ न जाने (14:3क)। तुच्छ न जानना जिसका अर्थ है बुरी तरह से तुच्छ जानना अर्थात किसी दूसरे के साथ ऐसे व्यवहार करना जैसे वह हो ही न बाहर के साथ कोई नहीं मैंने कुछ लोगों की पुस्तकें पढ़ी हैं, जिन्हें लगता है कि वे दूसरे मसीही लोगों से अधिक ज्ञानी हैं। उन पुस्तकों में से घृणा और ताने ही दिखाई देते हैं। क्या आप इस बात पर अपने आप को दूसरे से बलवान समझते हैं? पौलुस ने आप से कहा है, किसी भाई को जो आप से सहमत न हो तुच्छ न जानें।

फिर पौलुस ने अपना ध्यान उनकी ओर मोड़ा जिनको निर्बल का नाम दिया गया और मांस न खाने वाला खाने वाले पर दोष न लगाएं (आयत 3ख)। अध्याय 14 में पौलुस ने दोष लगाने के बारे में काफी कुछ कहा (देखें आयतें 1, 3, 4, 10 13)। दोष जिसका अर्थ है निर्णय करना अर्थात न्याय करना है। रोमियों 14 में आयत 5 में इसका अनुवाद मानता हुआ है और आयत 13 में ठान लो हुआ है। रोमियों 16:17 में यह निष्कर्ष निकाले बिना कि कौन सी बात उसके विवरण से मेल खाती है, हम पौलुस की आज्ञा नहीं मान सकते। आमतौर पर आलोचना करते, कमियां निकालते, और/या दोष लगाते हुए किसी के विरूद्ध निर्णय देना है और यहां ऐसा ही हुआ है। 14:3 में कहा गया है जो मांस खाने से परहेज करता है, वह उस पर जो खाता है, आलोचना और निर्णय न दे।

यदि आपका मानना है कि कोई काम करना गलत है, तो किसी के साथ भी जो आपसे असहमत हो कठोर और असहिष्णु होना आसान बात है। मैंने मसीही लोगों की कमियों की ओर ध्यान दिलाने को समर्पित पुस्तकें पढ़ी हैं इनमें से कुछ में कठोर और न्याय करने का स्वर सुनाई देता है।

किसी भाई का न्याय करने से परहेज रखना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है (14:3ग)। जब कोई भाई मसीही बन गया तो परमेश्वर ने उसे अपनी संतान होने के लिए ग्रहण कर लिया है। ग्रहण किया, का अनुवाद उसी यूनानी शब्द से किया गया है जिसका अनुवाद आयत 1 में हुआ है। इस विचार में यह संकेत मिलता है कि यदि परमेश्वर ने उसे ग्रहण कर लिया है तो हमें भी कर लेना चाहिए। एक प्रचारक जिम्मी ऐलन ने यह जोड़ते हुए कहा कि हमें एक-दूसरे की एक समान देखभाल करनी चाहिए जैसा कि मसीह ने हमारा और सब का स्वागत किया है।

पौलुस यह सुझाव नहीं दे रहा था कि हमें गैर मसीही लोगों को अपनी संगति में शामिल कर लेना चाहिए। जिन लोगों की उसने बात की, परमेश्वर ने उन्हें ग्रहण कर लिया था (आयत 3) अर्थात परमेश्वर के सेवक (आयत 4), जो प्रभु के लोग

थे (आयत 8) और मसीह में भाई थे (आयत 10)।

फिर प्रेरित ने अपने पाठकों से पूछा, तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? (आयत 4क) सेवक के लिए सामान्य शब्द से नहीं किया गया है, बल्कि यह घर के लिए शब्द से लिया गया है। घरेलू नौकर है। परन्तु यदि आप किसी से काम करवाना चाहते हैं, शायद कोई भरोसेमंद काम करने वाला, जो वर्षों से आपके साथ रहा हो, और आप के घर आया कोई मेहमान आपके सेवक के काम करने के ढंग की आलोचना करने लगे? तो आप की प्रतिक्रिया क्या होगी? शायद आप अपने अतिथि को बताएंगे (बेशक, विनम्रता से) कि उसके विचार का नहीं, बल्कि आपके विचार का महत्व है। पौलुस ने कहा, उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से संबंध रखता है, वरन वह स्थिर ही कर दिया जाएगा, क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है (आयत 4ख)।

संदेश को समझना आसान है। आप और मैं परमेश्वर के सेवक हैं और एक दिन अपने सेवक होने का परमेश्वर को हिसाब देना होगा (देखें आयतें 10ख-12)। परमेश्वर ही निर्णय करेगा कि कौन स्थिर रहे या गिर जाए। साथ ही आप को और मुझे एक-दूसरे का न्याय करने का कोई हक नहीं है। रोमियों 12 के अपने अध्ययन में हमने देखा कि हमें बदला नहीं लेना चाहिए क्योंकि यह काम परमेश्वर का है (आयत 19)। एक अर्थ में पौलुस ने यहां कहा कि न ही हमें न्याय करना चाहिए क्योंकि यह भी परमेश्वर की जिम्मेदारी है। एक बार बैटसेल बैरेट बैक्सटर से पूछा गया कि बताएं कि उनके विचार से कौन व्यक्ति उद्धार पाया हुआ या खोया हुआ है। भाई बैक्स्टर ने उत्तर दिया। आप मुझसे गलत सवाल पूछ रहे हैं। लोगों को स्वर्ग या नरक में भेजना परमेश्वर का काम है, मेरा नहीं।

पौलुस ने आत्मविश्वास की एक बात जोड़ी। यह कहने के बाद कि उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी से ही संबंध रखता है उसने कहा बरन वह परमेश्वर का सेवक स्थिर ही कर दिया जाएगा, क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है (14:4ग)। यह वचन मान लेता है कि प्रश्न वाला सेवक सच्चे मन से प्रभु की सेवा कर रहा है। पौलुस के कहने का अर्थ है कि चाहे उसके भाई उसे छोटा समझें या उसे स्वीकार न करें, परन्तु परमेश्वर फिर भी उसका स्वागत करता है और उसे स्थिर खड़ा कर सकता है।

जोर: बलवान से निर्बल को ग्रहण करने और उसे तुच्छ न जानने के लिए कहा गया। पौलुस ने यह भी संकेत दिया कि निर्बल को बलवान को ग्रहण कर लेना चाहिए (देखें 15:7) और अपने भाइयों का न्याय नहीं करना चाहिए। कोई पूछ सकता है, मुझे कैसे मालूम कि मैं बलवान भाई हूं या निर्बल? अधिकतर बलवान सोच वाले लोग अपने आपको बलवान का ठप्पा लगा लेते हैं (मैं केवल एक घटना को याद कर सकता हूं जब मैंने किसी मसीही से अपने आपको कमजोर भाई कहते सुना)। एक-दूसरे को ग्रहण करने के संबंध में अधिकतर मुद्दों पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप बलवान है या निर्बल। (अपने वचन पाठ में आगे आप देखेंगे कि बलवान पर जिम्मेदारी अधिक है) बलवान हो या निर्बल संदेश हर मसीही के लिए एक ही है एक-दूसरे को ग्रहण करो। (देखें15:7)।

फिलेमौन

ब्रूस मैक्लार्टी

समस्या को स्पष्ट रूप से कहना (आयत 10)

बहुत साल पहले मैंने किसी मित्र के जनाजे पर वचन सुनाया था, जिसकी मृत्यु एड्स से हुई थी। सच तो यह है कि मैं उसके दोनों जनाजों पर बोला था। पहला उस नगर में था, जहां मैं रहता हूं और दूसरा कई मील दूर उसके छोटे से देहाती नगर में था। उसका जीवन कुछ समय से परमेश्वर के विद्रोह में रहा और वह समलैंगिक जीवन-शैली के द्वारा एचआईवी की चपेट में आ गया था। मैं धन्यवाद करता हूं कि उड़ाऊ पुत्र की तरह वह अपने आपे में आया। वह परमेश्वर की ओर लौट आया और विश्वासी मसीही के रूप में उसने अपने जीवन के अंतिम वर्ष बिताए।

पहले जनाजे पर मौजूद हर किसी को पाप और पश्चाताप की उसकी कहानी मालूम थी। हमने एड्स की त्रासदी और क्षमा की परमेश्वर की सुन्दरता पर खुलकर बातें की, परन्तु जब हम उसके शहर की ओर कई घण्टों के सफर पर चल पड़े तो शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि एड्स की किसी ने कोई बात नहीं की। यह घना, त्रासद और अनकहा रहस्य था जिसका हर किसी को पता था।

जनाजे का संदेश देते हुए मैं सभाघर में बढ़ते तनाव को महसूस कर सकता था। कुछ था जो कहे जाने के लिए पुकार रहा था, परन्तु लगा कि हर कोई इसे सुनने से डर रहा है। अन्त में जनाजे के संदेश में एक प्वाइंट पर मैंने एड्स के बारे में बात की। मुझे लगा जैसे मुझे शीशे की खिड़की में हथौड़े से मारा गया है। कुछ बिखर गया था। कुछ स्त्रियां विलाप करने लगीं। कठिन सच्चाई बाले जाने तक तनाव बढ़ गया था और फिर वास्तविक शोक और चंगाई आरंभ हो सकी।

उस दिन जनाजे का माहौल कुलुस्से की कलीसिया में फिलेमोन के नाम पत्र पढ़े जाने वाले दिन जैसा ही होगा। उनेसिमुस के साथ वापस आया था। हर किसी को मालूम था कि फिलेमोन और उसके भागौड़े दास के बीच गंभीर समस्या है। यह क्या सोच रहे थे? क्या होने वाला है? पौलुस परिस्थिति पर क्या सोच रहा था? पत्र के पढ़े जाने से जनाव बन गया था।

अन्त में खामोशी तब टूटी जब उनेसिमुस का नाम लिया गया (आयत 10)। मुझे लगता है कि ऐसा लगा होगा, जैसे किसी ने पत्थर के फर्श पर मिट्टी का घड़ा फोड़ दिया हो। कोई थक के रह गया होगा, कितनों की चीखें निकली होंगी। तोभी बेहतरीन भाग खत्म हो गया था। खतरनाक रहस्य बना दिया गया था और फिर चंगाई आरंभ हो सकती थी।

आपकी अपनी स्वतंत्र इच्छा से (आयत 14)

आगे की कहानी वास्तविक विवरण है या आधुनिक समय का दृष्टांत, मुझे नहीं मालूम। मैंने कई प्रवचनों में कई बार इसके अंश सुने हैं। कहानी एक स्त्री की है, जिसे किसी से प्रेम हो गया और उसने सदा प्रसन्नता से रहने की आशा से विवाह

कर लिया। परन्तु दम्पत्ति के अपने हनीमून से लौटने के थोड़ी देर बाद ही नाश्ते में पति में अपनी दुल्हन को एक लिस्ट पकड़ा दी। जब उसने पढ़ा तो यह सोचकर कि यह बेतुका मज़ाक है कि वह हंस पड़ी परन्तु जल्द ही उसने देखा कि उसका पति हस नहीं रहा है और उसके लिए यह एक गंभीर बात थी।

सूची को दोबारा देखते हुए वह उसे पढ़ने लगी। उसके पति ने विस्तार से लिखा था कि वह कैसे चाहता है कि वह सब कुछ करे, इसमें वह भी बताया गया था कि वह खाना क्या चाहता है, किस समय उसको खाना दिया जाए, उसके कपड़ों की देखभाल कैसे की जाए, उसकी पत्नी के दूसरे कर्त्तव्यों का लगभग हर दूसरा कल्पना किया जा सकने वाला विवरण। उसने नीरस, कठोर, रौब जमाने वाले, बेदर्द और कड़े पति के रूप में अपने आपको साबित कर दिया था। पत्नी का दिल टूट गया, परन्तु वह उन वचनों को पूरा करने के लिए समर्पित थी, जो उसने दिए थे। वह साल भर साल उस लिस्ट के अनुसार करते हुए बिताती रही।

कुछ समय के बाद वह आदमी मर गया। कुछ साल बाद उसने एक युवक से विवाह कर लिया। वह आदमी विनम्र, दयालु और बर्दाशत करने वाला था। वह हमेशा वही चाहता जो उसकी पत्नी के लिए बेहतर होता। उसकी नजरों में पत्नी के लिए सम्मान था और वह उसकी बाहों में सुरक्षित महसूस करती और सचमुच में प्रेम किए जाने को।

उनकी शादी के कुछ साल बीत जाने के बाद वह स्त्री एक दिन कुछ देख रही थी, जो उसने जमा किया था। कुछ पुराने डिब्बों में से देखते हुए उसके हाथ कुछ चीज लगी, जिससे उसकी सांस रूक गई। वह चीज एक लिस्ट थी। उसने इसे सालों से देखा नहीं था। केवल अपने हाथ में आने पर ही उसको वह सारी पीड़ा याद आई जो उसने उस लिस्ट के साथ पहले झेली थी और वह चिल्लाने लगी।

कुछ समय तक वह अपने आंसू रूकने की प्रतीक्षा करते हुए अपनी पीड़ादायक यादों से अपने पति को परेशान न करने की इच्छा से, काफी देर तक वहां बैठी रही। इस लिस्ट को ध्यान से देखते हुए उसने पाया कि वह अपने नये पति के लिए उस लिस्ट की हर बात वह कर रही थी और उसे अच्छा लग रहा था। दोनों में अंतर क्या था? वह यह एहसास करके कि था देने वाला काम कभी भी उसके लिए वास्तव में समस्या नहीं रहा, खूब रोई। उसे अपने नए पति की सेवा करना अच्छा लगता था और वह काम वह बिना लिस्ट के करती थी। कुछ करने के लिए बाध्य होने और कुछ करने के लिए स्वतंत्र होने में अन्तर वही है, जो दासता और प्रेम में अन्तर है।

शायद इस कारण से (आयत 15)

अब तक की सबसे बड़ी मनोवैज्ञानिक मेरी मां है। जब मेरे तीन भाई और मैं इकट्ठे होते तो हम इस बात पर चकित होते हैं कि उसने हमारी सोच को कैसे डाला। हमें दिए उसके सबसे बड़े उपहारों में से एक हर कठिन परिस्थिति में आशीष को देखने की आदत है।

मुझे बचपन में अपने नाना-नानी से मिलने जाने की बातें बिल्कुल साफ याद हैं। वे हमारे जीवनों में बड़े खास लोग होते थे और उनके घर से निकलने पर हमारे मन

बड़े दु:खी होते थे। जब तक वे हमें दिखाई देते थे तब तक हमारी आंखों से आसूं छलकना बंद नहीं होते थे। फिर मां हमेशा एक ही बात कहती, और कोई तरीका भी नहीं है। जाने पर अगर तुम्हें दु:ख न हो तो क्या यह बहुत नहीं होगी? इसका अर्थ यह होगा कि जिन लोगों को तुम छोड़कर जा रहे हो वे बहुत ही अच्छे लोग नहीं है।। हमारे दिल से दिमाग तक जाने में चाहे समय लगता है, पर हमें मालूम होता था कि मां सही है।

फिलेमोन 15 में पौलुस का संदेश ऐसा ही है। उसने दिखाया कि परेशानी के बादल के पीछे जिसमें उनेसिमुस था चमकदार देखा, की सम्भावना थी। यदि वह भागा न होता तो उसने कभी मसीही नहीं बनना था। वह दास से कहीं अधिक बनकर लौट रहा था, वह मसीही भाई के रूप में वापस आ रहा था। पौलुस जैसे कह रहा हो, फिलेमोन, और किसी तरह से तू ऐसा नहीं चाहता।

दास से बढ़कर (आयत 16)

विलियम विलबर फोर्स (1759-1833) ने अंग्रेजी साम्राज्य में गुलामों की खरीद-फरोख्त को खत्म करने के काम में अपना जीवन लगा दिया। इक्कीस वर्ष की आयु में अपना राजनैतिक कैरियर आरंभ करके उसने लगभग कुछ न करते हुए संसद में अपने पहले कुछ वर्ष बिताए। परन्तु 1787 तक वह बदल गया। अक्तूबर 28, 1787 को अपनी पत्रिका में उसने लिखा, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मेरे सामने दो बड़े काम रखे हैं, गुलामों की खरीद-फरोख्त को समाप्त करना और रिवाजों (नैतिकताओं) में सुधार करना। इन दो बड़े कारणों के लिए उसने अपना बाकी जीवन दे दिया।

गुलामों की खरीद-फरोख्त को खत्म करने की अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए विलबर ने कई नीतिगत संधियां की। उसने बातचीत आरंभ करने के लिए इस्तेमाल करने के लिए एक विशेष पदक पाने के लिए मना लिया। इस थाली के बीच में एक अफ्रीकी गुलाम को बेड़ियों में बंधे हुए और झुककर विनती करते हुए दिखाया गया था। गुलाम के नीचे यह शब्द लिख हुए थे, ''क्या मैं मनुष्य और भाई नहीं हूं''?

विलबर फोर्स को समझ आया कि गुलामी का समर्थन तभी कमजोर होने लगेगा जब लोग गुलामों को सम्पत्ति के रूप में देखना बंद करके उन्हें मानवीय जीवों और मानवीय परिवार के सदस्यों के रूप में देखने लगेंगे। प्रेरित पौलुस ने भी यही किया। उनेसिमुस को अपने स्वामी फिलेमोन के पास वापस भेजते हुए उसने उसे एक पत्र देकर भेजा। उस पत्र में पौलुस ने लिखा कि वह उसे उसके पास, अब उसे दास की नाई नहीं वरन दास से भी उत्तम अर्थात प्रिय भाई के समान, भेज रहा था (आयत 16)। फिलेमोन ने उनेसिमुस की मसीही परिवार के सदस्य के रूप में देखना आरंभ करते हुए पौलुस की चिंता खत्म हो जानी थी।

फिलेमोन ने पौलुस की चुनौती की क्या प्रतिक्रिया दी? हम नहीं जानते। फिलेमोन के नाम पत्र आज हमारे पास है और उसे नये नियम में जगह दी गई है, इसका अर्थ यह है कि इसकी अच्छी संभावना है कि दास के स्वामी ने पौलुस की उम्मीद के अनुसार ही उत्तर दिया।

विलबर फोर्स का जीवन भर का अभियान सफलता में पूरा हुआ। गुलामों की खरीद-फरोख्त को खत्म करने के लिए उसके द्वारा शुरूआत करने के छियालीस साल बाद 26 जुलाई 1833 के दिन ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्ज ने पूरे अंग्रेजी साम्राज्य में गुलामी को खत्म करने के लिए काम किया। विलबर्स फोर्स तीन दिन बाद मर गया, यह जानते हुए कि गुलाम अन्त में मनुष्यों और भाइयों के रूप में देखे जाने लगे हैं।

''उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे'' (आयत 17)

एक रूसी लेखक लियो टॉलस्टाय जो 1819 से 1910 तक रहा, जहां प्रेम है वहां परमेश्वर है। शीर्षक से एक लघु कहानी लिखी। इसमें उसने मार्टिन अवडेक नामक एक गरीब मोची के बारे में बताया, जो छोटे से भूमितल वाले कमरे में रहता और काम करता था। भूमितल में एक खिड़की ऊंचाई पर थी जिससे मार्टिन लोगों के गली में से जाते हुए केवल पैरों को देख सकता था।

एक रात नींद में मार्टिन को यह कहते हुए एक आवाज सुनाई दी, मार्टिन, मार्टिन कल गली में बाहर देखना, क्योंकि मैं आऊंगा। यह मानते हुए वह आवाज प्रभु की है जो उसने सुनी थी, उसने प्रभु के आने की राह देखते हुए अगला दिन बड़ी उत्सुकता से बिताया। परन्तु दिन बीत जाने पर इसमें वही रोज होने वाली घटनाएं थीं।

एक बूढ़ा थका-मांदा सिपाही जिसका नाम स्टेपनिक था, ऊपर सड़क के किनारे से बर्फ को साफ कर रहा था कि मार्टिन को उस पर तरस आया और उसने उसे चाय का गर्म पयाला पिलाने के लिए अपनी दुकान में बुला लिया। बाद में एक बच्चे के चीखने की आवाज सुनकर वह बाहर गया और एक भूख से तड़प रही मां को उसके नवजात शिशु के साथ देखा। उन्हें अपनी दुकान में बुलाते हुए मार्टिन ने उस स्त्री को कुछ रोटी और खाने के लिए टमाटर का गर्म सूप दिया और बच्चे को उठा लिया। यह देखकर कि उस स्त्री के पास कड़ाके की ठण्ड के लिए अपने आपको ढांपने के लिए कपड़ा नहीं है उसने उसे अपना पुराना कपड़ा दे दिया।

कुछ देर बाद वह स्त्री और बच्चा चले गये, मार्टिन ने गली में बलवे की आवाज सुनी, यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है, बाहर को गया। उसे एक बूढ़ी स्त्री मिली, जो सेब बेच रही थी। उसने गली के एक लड़के को सेब चुराते हुए पकड़ लिया था और उसे उसके बालों से पकड़ा हुआ थां मार्टिन ने दोनों के बीच सुलह करवाने की कोशिश की अैर चुराए हुए सेब के पैसे भी चुकाने चाहे। कई मिनट उनकी बातचीत के बाद उस स्त्री और लड़के में सुलह हो गई और वे और वह लड़का खुशी से उस बूढ़ी स्त्री की सेबों की टोकरी उठाकर ले गया।

उस शाम मार्टिन जब अपनी बाइबल को पढ़ने के लिए बैठा तो उसे एक आवाज यह कहते हुए सुनाई दी, मार्टिन, मार्टिन तू मुझे नहीं जानता? मार्टिन ने पूछा, कौन है? मैं हूं, एक जानी-पहचानी आवाज ने कहा। फिर परछाई में से वह बूढ़ा सिपाही स्टेपनिक निकला, और उतनी ही जल्दी से वह अलोप हो गया। एक और आवाज ने कहा, मैं हूं। फिर मार्टिन ने बच्चे के साथ उस जवान महिला को देखा, और वह भी आलोप हो गई। एक तीसरी आवाज ने कहा, मैं हूं, इस बार वह सेब बेचने वाली

स्त्री और छोटा लड़का थे, जो अलोप हो गए और जो दिखाई दिए और गायब हो गए।

अन्त में मार्टिन को समझ आया कि उसने उस दिन वास्तव में प्रभु को देखा था। उसने अपनी बाइबल में यीशु के यह शब्द पढ़े क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया, मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया (मत्ती 25:35)। फिर उसने उस पृष्ठ के नीचे पढ़ा, तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया। (मत्ती 25:40)।

टॉलस्टाय ने कहानी खत्म की, और मार्टिन को समझ आ गया कि उसका सपना सच हो गया था, और यह कि उद्धारकर्ता सचमुच में उस दिन उसके पास आया था और उसने उसका स्वागत किया था।

मसीह ने अपनी कलीसिया कैसे स्थापित की?

ए.डी. क्लोर

पृथ्वी पर मसीह के जीवन का एक अद्भुत गुण यह है कि उसने अपने लिए यहां कुछ जोड़ने की इच्छा नहीं की। नये नियम में कहीं भी उसके कोई मकान बनाने, किसी प्रकार के भवन की मरम्मत करने या भूमि खरीदने की बात पढ़ने को नहीं मिलती। सुसमाचार की पुस्तकों में उसके कभी किसी प्रकार का कपड़ा, औजार या भोजन खरीदने की बात नहीं की गई जब वह इस संसार में था और एक अर्थ में यहां का नागरिक ही था, तो उसके पास कोई घर नहीं था। वह संसार में था, परन्तु संसार उसमें नहीं था, वह संसार में इसके एक भाग के रूप में रहता था, पर उसने संसार को अपने भीतर नहीं रहने दिया। पृथ्वी पर, वह विदेशी भूमि में एक अजनबी, अर्थात एक मुसाफिर की तरह रहता था, जिसका मोह और जीवन किसी दूसरे संसार से था।

मसीह ने मेरा और मुझे जैसे अधिकारात्मक शब्दों का बहुत कम प्रयोग किया था। उसने मेरे चेले (यूहन्ना 8:31), मेरे पिता (मत्ती 26:39), मेरी देह (मत्ती 26:26), मेरा लहू (मत्ती 26:28), मेरी बातें (लूका 6:47), अपनी कलीसिया (मत्ती 16:18) अवश्य कहा है अपनी देह, लहू और बातों के उसके हवाले आत्मिक संदर्भ में ही थे जिनमें कोई व्यक्तिगत अभिलाषा दिखाई नहीं देती थी।

सुसमाचार की पुस्तकों के अनुसार, मसीह पृथ्वी पर कोई कॉलेज, ईंट-पत्थरों का मकान, या दौलत नहीं बल्कि अपनी सेवकाई की एकमात्र व्यक्तिगत सम्पत्ति, कलीसिया का एक स्थाई विस्तार छोड़कर जाना चाहता था (मत्ती 16:18)। उसने पृथ्वी पर अपनी सेवकाई परमेश्वर के राज्य के आने के प्रचार से आरंभ की (मत्ती 4:17), और राज्य के प्रचार से समाप्त की (प्रेरितों 1:3)। उसने संकेत दिया कि उसके द्वारा स्थापित कलीसिया परमेश्वर के राज्य का सांसारिक रूप होगी, इस प्रकार इस अर्थ में, वह परमेश्वर के राज्य की तुलना अपनी कलीसिया से कर पाया (मत्ती

16:16-18)।

क्योंकि केवल कलीसिया ही एक ऐसी चीज है अर्थात एकमात्र सम्पत्ति जिसे मसीह वास्तव में छोड़कर गया था, इसलिए इसका अर्थ यह है कि उसके लिए कलीसिया का एकवचन महत्वपूर्ण था और हमारे लिए भी होना चाहिए। हमारी सबसे बड़ी इच्छा उसकी कलीसिया के रूप में बनना और रहना होनी चाहिए। इस सबके प्रकाश में, हमारे लिए एक प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण बन जाता है कि हम उसकी कलीसिया में प्रवेश कैसे कर सकते हैं और उसकी कलीसिया बनकर कैसे रह सकते हैं? यदि हम यह खोज करें कि मसीह ने आरंभ में अपनी कलीसिया की स्थापना कैसे की तो हमें इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। जब हमें यह पता चल जाएगा कि मसीह ने वास्तव में अपनी कलीसिया कैसे स्थापित की, तो हम मान जाएंगे कि हम आज उन स्थानों में जहां पर कलीसिया नहीं है, उसकी कलीसिया कैसे स्थापित कर सकते हैं और हमें अहसास होगा कि हम जहां भी रहें उसकी कलीसिया के विश्वासी सदस्य बनकर रह सकते हैं।

अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करते हुए, मसीह ने अपने पुनरुत्थान के बाद, पिन्तेकुस्त के दिन अपनी कलीसिया की स्थापना की थी (मत्ती 16:18, प्रेरितों 2)। उसने इसे कैसे स्थापित किया?

कलीसिया

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

कलीसिया एक यूनानी शब्द है जिसका अनुवाद अंग्रेज़ी में "चर्च" कहकर किया गया है। कलीसिया का अर्थ वास्तव में ''एक मंडली'' या ''एक जन-सभा'' है। किन्तु कलीसिया का अर्थ घर या स्थान बिल्कुल नहीं है। कलीसिया के बारे में बाइबल में लिखा है, कि कलीसिया उन लोगों की एक मंडली है जिन्होंने यीशु मसीह में विश्वास लाकर अपना मन फिराया है और उद्धार पाने के लिये उसकी आज्ञा को माना है, अर्थात कलीसिया उद्धार या मुक्ति पाए हुए परमेश्वर के लोगों की एक मंडली है। एक स्थान पर जमा होने के लिये कलीसिया को एक घर या जगह की ज़रूरत हो सकती है, पर घर या जगह किसी भी रूप में वास्तव में कलीसिया नहीं है। किसी जगह, स्थान, घर या भवन को कलीसिया कहकर सम्बोधित करना इसलिये बिल्कुल गलत बात है।

''कलीसिया'' को एक बड़े विश्वव्यापी रूप में भी देखा जा सकता है अर्थात, एक ऐसा समूह है जिसमें संसार में के सभी मसीही शामिल हैं। जब प्रभु यीशु ने कहा था कि ''मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा,'' (मत्ती 16:18), तो यीशु के कहने का यही अभिप्राय था। परन्तु किसी भी स्थान पर जब मसीही लोग एकत्रित होते हैं तो उसे भी कलीसिया माना जाता है। (1 कुरिन्थियों 1:2)। परमेश्वर की आराधना करने के लिये जमा हुए मसीही लोगों की मंडली एक कलीसिया है। (1कुरिन्थियों 11:18; 14:19)। कलीसिया केवल एक ही है। परन्तु अलग-अलग देशों में, और शहरों और स्थानों पर उस एक कलीसिया की अनेक मंडलियां पाई जा सकती हैं। उन मंडलियों को उन

स्थानों या शहरों के नामों से भी सम्बोधित करके पुकारा जा सकता है। जैसे कि हम बाइबल में पढ़ते हैं, ''यरूशलेम की कलीसिया'' या ''कलीसिया जो कुरिन्थुस में है।'' (प्रेरितों, 8:1; 11:22; रोमियों 16:1; 1 कुरिन्थियों 1:2; 2 कुरिन्थियों 1:1; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1)। फिर, जैसे, ''गलतिया की कलीसिया (गलतियों 1:2; 1:22; 1 थिस्सलुनीकियों 2:14; 1 कुरिन्थियों 16:1, 19; प्रकाशित. 1:4)। अर्थात, कलीसिया क्योंकि केवल एक ही है, इसलिये उस एक कलीसिया की मंडली को बिना कोई साम्प्रदायिक नाम दिये आसानी से कहीं पर भी पहचाना जा सकता है, जैसे कि यह कहकर कि कलीसिया जो किसी मसीही के घर में मिलती है। (रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:19; फिलेमोन 2)।

एक और बड़ी ही ख़ास बात बाइबल से हमें यह सीखने को मिलती है, कि जहां कहीं भी कलीसिया के बारे में लिखा या कहा गया है तो उसका वर्णन ऐसे शब्दों के द्वारा किया गया है जिनसे परमेश्वर और मसीह का नाम ऊंचा हो, अर्थात महिमा कलीसिया के द्वारा परमेश्वर और मसीह को ही मिले, न कि किसी मनुष्य को। (1 कुरिन्थियों 1:10-17) बाइबल में कलीसिया को ऐसे नामों से कभी भी और कहीं भी नहीं सम्बोधित किया गया है जैसे कि आज के समय में किया जाता है, जैसे कि "सेंट पॉल चर्च," "सेंट पीटर चर्च" या "सेंट मैरी चर्च" और "सेंट जॉन चर्च" इत्यादि।

बाइबल में कलीसिया को कहा गया है ''परमेश्वर का घराना'' (1 तीमुथियुस 3:15), ''परमेश्वर की कलीसिया'' (1 कुरिन्थियों 1:2; 10:32; 11:16, 22; 15:9; 2 कुरिन्थियों 1:1; गलतियों 1:13; 1 थिस्सलुनीकियों 2:14; 2 थिस्सलुनीकियों 1:4; 1 तीमुथियुस 3:5; प्रेरितों 20:28), ''जीवते परमेश्वर की कलीसिया'' (1 तीमुथियुस 3:15) ''मसीह की कलीसियाएं'' (रोमियों 16:16) या, कलीसिया जो ''परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है।'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:1)। बाइबल में कहीं पर भी कलीसिया को किसी मनुष्य के नाम से या किसी शिक्षा के नाम से, जैसे ''बैप्टिस्ट'' "मेथोडिस्ट" ''पेन्टेकोस्टल'' ''सैवेन्थ डे'' या ''सनीचर मिशन'' आदि नामों से नहीं सम्बोधित किया गया है। कलीसिया केवल मसीह और परमेश्वर की है, इसलिये उस पर उन्हीं का अधिकार है।

बाइबल में कुछ ऐसे विशेष शब्दों को भी उपयोग में लाया गया है, जिनके द्वारा कलीसिया के स्वभाव पर प्रकाश डाला गया है। जैसे कि कलीसिया को एक घर कहा गया है (1 कुरिन्थियों 3:9; इब्रानियों 3:6; 1 तीमुथियुस 3:15) कलीसिया ''परमेश्वर का मन्दिर'' है, क्योंकि परमेश्वर व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से अपने लोगों के भीतर रहता है। (1कुरिन्थियों 3:16-17; 6:19-20)। परमेश्वर का यह मन्दिर पृथ्वी पर के ईंट और पत्थरों से नहीं; पर उसके लोगों से, जिन्हें बाइबल में ''जीवते पत्थर'' कहकर सम्बोधित किया गया है, बना हुआ है। (1पतरस 2:5)। ऐसे ही, कलीसिया को "मसीह की देह'' और मसीह को कलीसिया का ''सिर'' कहकर सम्बोधित किया गया है। (इफिसियों 1:22-23; 4:4, 15-16; कुलुस्सियों 1:18, 24)। कलीसिया एक ऐसी देह है जिसके भीतर सारे लोग अलग-अलग अंगों के समान हैं, और जिस प्रकार एक मनुष्य की देह में बहुत से अंग होते हैं जो अलग-अलग काम करते हैं, वैसे

ही कलीसिया में सब लोग हैं जो भिन्न-भिन्न कार्य कर सकते हैं। (रोमियों 12:4-8; 1 कुरिन्थियों 12:14-26)। और जिस प्रकार से मनुष्य की एक देह के भीतर सभी अंग रहते हैं, वैसे ही कलीसिया अर्थात मसीह की देह में भी है, यानी संगति में रहकर सदस्य आपस में एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। (मत्ती 12:49-50; इफिसियों 2:19; 2 कुरिन्थियों 6:18; 1 तीमुथियुस 5:1-2)। मसीह की कलीसिया में उसके लोग आपस में दुख और सुख बांटते हैं (रोमियों 12:15; 1 कुरिन्थियों 12:26; गलतियों 6:2,10)। कलीसिया कई प्रकार से एक ''संगति'' के समान है। (प्रेरितों 2:42; 1 कुरिन्थियों 1:9; गलतियों 2:9; इफिसियों 3:9; फिलिप्पियों 3:10; 1 यूहन्ना 1:3,6-7)। कलीसिया को बाइबल में, मसीह की दुल्हन के रूप में भी दर्शाया गया है, जिसका अभिप्राय इस बात से है कि जो लोग उसकी कलीसिया में हैं वे एक पवित्र जीवन निर्वाह करें। (इफिसियों 5:22-32; 2 कुरिन्थियों 11:2)। प्रेरित पतरस ने बड़े ही सुन्दर शब्दों में कलीसिया का चित्रण इन शब्दों में किया था, 1 पतरस 2:9-10:

> ''तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो। तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी, पर अब तुम पर दया हुई है।''

कलीसिया का संगठन बड़ा ही साधारण है। मसीह का दर्जा कलीसिया में सबसे बड़ा है, वोह प्रमुख या मुखिया है। इस बात को अनेक ढंग से बाइबल में समझाया गया है। मसीह को ''प्रधान रखवाला'' (1 पतरस 5:4), ''सिर'' (इफिसियों 1:22, 23; 4:4; 15-16; कुलुस्सियों 1:18, 24), ''कोने का पत्थर'' (इफिसियों 2:20), और ''नींव'' कहकर सम्बोधित किया गया है। (1 कुरिन्थियों 3:11)। अलग-अलग स्थानों पर मसीह की कलीसियाओं में, प्रत्येक कलीसिया में, जो लोग कलीसिया की अगुवाई करते थे, उन्हें हर एक कलीसिया में बाइबल में वर्णित कुछ विशेष योग्यताओं के आधार पर चुनकर नियुक्त किया जाता था, और वे प्राचीन, बुज़ुर्ग, रखवाले, अगुवे बिशप या पास्टर कहलाते थे। (1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9; 1 पतरस 5:1-4, फिलिप्पियों 1:1; प्रेरितों 20:28; इफिसियों 4:11; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12; इब्रानियों 13:17)। प्रत्येक मंडली में कम-से-कम दो या इससे भी अधिक अगुवे होते थे और वे उसी कलीसिया की अगुवाई करते थे। जिसके वे स्वयं सदस्य थे बहुत सारी कलीसियाओं के ऊपर एक अगुवा या एक बिशप नहीं होता था। प्रत्येक मंडली में अगुओं की सहायता करने के लिये सेवकों को भी चुनकर नियुक्त किया जाता था। (1तीमुथियुस 3:8-13; फिलिप्पियों 1:1)। क्योंकि प्रत्येक कलीसिया मसीह के अधीन रहकर उसके वचन की अगुवाई में एक ही शिक्षा पर अमल करती है, इसलिये वे सब मंडलियां एकता के सूत्र में बंधी रहती हैं। (यूहन्ना 13:34; 17:20, 21; रोमियों 12:16; 15:5; 1 कुरिन्थियों 1:10; 3:3; 2 कुरिन्थियों 13:11; इफिसियों 4:3; फिलिप्पियों 2:2)।

अब, मसीह की कलीसिया का सदस्य या मेम्बर कोई कैसे बनता है? बाइबल के अनुसार, जो व्यक्ति मसीह में विश्वास लाकर अपना मन सभी अन्य बातों से और

प्रत्येक बुरे काम से फिरा लेता है, और फिर उसकी आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लेता है, उसे मसीह स्वयं अपनी कलीसिया में मिला लेता है। (गलतियों 3:27; रोमियों 6:3; प्रेरितों 2:38, 41, 47)। जब कोई व्यक्ति प्रभु की आज्ञा मानकर एक मसीही और मसीह की कलीसिया का सदस्य बन जाता है तो उसे अन्य सभी मसीही लोगों की संगति की आवश्यकता होती है। (इब्रानियों 3:13; 10:24-25)। मसीही जीवन में आगे बढ़ने के लिये अन्य मसीही जनों की संगति की आवश्यकता होती है, इसी कारण से मसीह ने कलीसिया को बनाया है।

कलीसिया के सम्बन्ध में पाई जानेवाली कुछ गलत धारणाओं पर भी विचार करना ज़रूरी है। मसीह ने जब अपनी कलीसिया की स्थापना की थी तो प्रेरित पतरस को प्रभु ने विशेष रूप से इस्तेमाल किया था, अर्थात उसने सबसे पहली बार मसीह के सुसमाचार को लोगों को सुनाया था, पर उसे कलीसिया का मुखिया या सिर नहीं ठहराया गया था। (प्रेरितों 2:14-47; 10:1-48)। पतरस ने नए नियम की दो पत्रियों को लिखा था, और पहली शताब्दी में वोह एक कलीसिया में प्राचीन भी था (1 पतरस 5:1; यूहन्ना 21:15-17)। परन्तु वोह प्रभु के सभी अन्य प्रेरितों के समान ही था, यदि कोई विशेष अधिकार उसे दिए गए थे, (मत्ती 16:17-19), तो वही अधिकार अन्य सभी प्रेरितों को भी दिए गए थे। (मत्ती 18:1, 18; यूहन्ना 20:23)। पतरस तथा अन्य प्रेरित कलीसिया के बुनियादी सदस्य थे, क्योंकि सबसे पहले उन्होंने ही मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया था, और वे सब प्रेरित मसीह के पुनरुत्थान के भी गवाह थे। (इफिसियों 2:20; 1 कुरिन्थियों 12:28; प्रकाशित 21:14)। परन्तु कलीसिया की बुनियाद या नींव में स्वयं यीशु मसीह का एक बड़ा ही अहम किरदार था क्योंकि वोह उस नींव में कोने के सिरे का पत्थर था, अर्थात वही कलीसिया का आधार था। (इफिसियों 2:20; 1 पतरस 2:6-8)। पौलुस ने लिखा था: ''क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वोह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता।'' (1 कुरिन्थियों 3:11)। बाइबल में कहीं पर भी ऐसा नहीं लिखा हुआ है कि पतरस "पोप" था और सारी कलीसिया उसके कहने पर चलती थी, और न ही पतरस का कभी कोई उत्तराधिकारी था। एक बार जब एक व्यक्ति ने पतरस के सामने झुककर उसे प्रणाम करने की कोशिश की थी, तो पतरस ने उसे ऐसा करने से यह कहकर मना किया था कि ''मैं भी तो मनुष्य हूं।'' (प्रेरितों 10:25-26)। और जब पतरस ने गलती की थी, तो एक अन्य प्रेरित ने उसे डांट भी लगाई थी। (गलतियों 2:11-14)। पतरस के पास तो यह भी अधिकार नहीं था, कि कलीसिया में खड़ी हुई किसी समस्या का समाधान वोह स्वयं कर ले। (प्रेरितों 15:1-30)। इसलिये, जो लोग आज पतरस को कुछ खास महत्व देकर उसे कलीसिया में सबसे बड़ा मानते हैं, और कुछ लोगों को पतरस का उत्तराधिकारी मानकर उन्हें वोह दर्जा देते हैं, जो वास्तव में कलीसिया में केवल मसीह का है, तो वे लोग हकीकत में मसीह का निरादर करते हैं।

बाइबल की शिक्षानुसार, कलीसिया में सभी मसीही याजक अर्थात प्रीस्ट हैं। (1 पतरस 2:9; प्रकाशित. 1:6;5:10)। इसलिये हर एक मसीही प्रार्थना के द्वारा स्वयं परमेश्वर पिता के पास आ सकता है। (इब्रानियों 10:19-22; रोमियों 5:1-2; इफिसियों 2:18; 3:12; 1 यूहन्ना 2:1-2)। क्योंकि यीशु मसीह स्वयं हमारा मध्यस्थ

और महायाजक है। (1 तीमुथियुस 2:5; इब्रानियों 2:14-18; 4:14-5:10; 7:1-10:39)। आज हमें, किसी भी मसीही जन को, परमेश्वर के पास आने के लिये या अपनी प्रार्थना को परमेश्वर तक पहुंचाने के लिये किसी प्रीस्ट या पास्टर की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि प्रत्येक मसीही स्वयं एक याजक अथवा प्रीस्ट है। एक मसीही जन को अपने पाप स्वीकार करने के लिये किसी विशेष प्रीस्ट के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। मसीही लोग आपस में एक-दूसरे के सामने अपने पाप स्वीकार कर सकते हैं, और विशेषकर स्वयं परमेश्वर से प्रार्थना करके अपने पापों की क्षमा मांग सकते हैं। (याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9)। पर अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये किसी भी मनुष्य को किसी दूसरे मनुष्य के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि इस पृथ्वी पर एक भी इनसान ऐसा नहीं है जिस ने कभी कोई पाप न किया हो। केवल परमेश्वर ही है जो मनुष्यों के पाप क्षमा कर सकता है। उसने हम सबको अपना वचन दिया है बाइबल में लिखवाकर और हमें बताया है कि हम सब अपने-अपने पापों की क्षमा कैसे प्राप्त कर सकते हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम लोगों को परमेश्वर के वचन से शिक्षा दें। (प्रेरितों 13:38-39; मत्ती 18:5, 6,18; 23:13; लूका 11:52)। मनुष्यों के पास नहीं, पर हम सबको परमेश्वर के पास आने की आवश्यकता है।

इसी सम्बन्ध में यहां एक और बात की चर्चा की जा सकती है, और इसका सम्बन्ध मरियम अर्थात यीशु की माता से है। मरियम एक अच्छी यहूदी स्त्री थी, और इसीलिये उसे परमेश्वर ने अन्य सभी स्त्रियों में से चुना भी था ताकि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का जन्म पृथ्वी पर हो (लूका 1:39-43), किन्तु इसके अतिरिक्त, बाइबल में मरियम के जीवन के बारे में बहुत ही कम लिखा गया है। यीशु ने अपनी मृत्यु से पहले मरियम को यूहन्ना नाम के अपने चेले को सौंपा था ताकि वोह उसकी देख-भाल करे (यूहन्ना 19:25-27)। वोह स्वयं भी यीशु में, यीशु के भाइयों की तरह ही, विश्वास करती थी। (प्रेरितों 1:14)। बाइबल में एक भी जगह नहीं मिलता कि कभी किसी ने मरियम से प्रार्थना की हो। उसके पास किसी प्रकार की कोई अद्‌भुत शक्ति नहीं थी। यीशु के जन्म के बाद वोह कुंवारी नहीं रही थी। (मत्ती 1:24-25; 13:54-56; मरकुस 6:3; लूका 2:7)। उसके जीवन से हमें यह सीखने को मिलता है, कि उसने परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये अपने आप को नम्रतापूर्वक परमेश्वर को सौंपा था, और वोह मसीह में विश्वास करती थी।(लूका 1:38)। परन्तु वोह एक मनुष्य मात्र ही थी। न तो मरियम यीशु की तरह, हमारी बिचवई है और न ही उद्धारकर्ता, इसलिये मनुष्य को मरियम से प्रार्थना नहीं करनी चाहिए। जो लोग मरियम से प्रार्थना करते हैं और यीशु से भी अधिक उसका आदर करते हैं वे वास्तव में यीशु के प्रभुत्व का तिरस्कार करते हैं, क्योंकि उस आदर, सम्मान और भक्ति का हक़दार वास्तव में स्वयं प्रभु यीशु मसीह है, मरियम नहीं। (कुलुस्सियों 1:15-20; रोमियों 8:34; 1 तीमुथियुस 2:5; 1 यूहन्ना 2:1-2)।